

॥ जय भगवान् जी ॥



॥ माता वारोंदेवी प्रसन्न ॥

गुह्येरीचा कर्दनकाळ संघर्ष संध्या

Tread Mark

संपादक : लक्ष्मणराव पाटोळे

वर्ष : १३ अंक : ७

मंगलवार दि. २५ फेब्रुवारी २०२५ ते रविवार दि. २ मार्च २०२५

पाने : ८ किंमत : ५/- रुपये

www.crimesandhya.com महाराष्ट्रातील १४ जिल्ह्यांत वितरीत होणारे साप्ताहीक crimesandhyavasai@gmail.com

ठाणे ■ पालघर ■ मुंबई ■ जळगाव ■ नाशिक ■ धुळे ■ बिठ ■ परभणी ■ पुणे ■ संभाजीनगर ■ लातूर ■ धाराशिव ■ सोलापूर ■ नांदेड

नको ते नजरेस पडताच संतापाने पेटला

२

आईच्या प्रियकराचा मुलाने जीव घेतला

३

प्रेमसंबंधातून मुलगी गर्भवती झाली

४

जन्मदात्या आईने तिची हत्या केली

५

उसन्या पैशावरकल दोयांमध्ये वाढ झाला

६

चिडलेल्या मित्रानेच मित्राचा खून केला

७

पालघरमध्ये भव्य 'जय शिवाजी' जय

८

भारत पद्याचा'तून शिवजयंती साजरी

९

गुरु रविदासांच्या समतावादी विचारांचा धागा

१०

मनामनात रुजला पाहिजे -प्रा.डॉ.अनंत राऊत

मेरी भावना



चित्र : श्री. वासुदेव कामत

भाऊ के जीवन में 'मेरी भावना' का प्रभाव था अपार; वे कहते, 'मिला जन्म दोबारा तो पाऊ इन्ही सिद्धांतों का आधार!'

जिसने राग-द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्ष-मार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया॥
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर ब्रह्मा, या उसको स्वाधीन कहो।
भक्तिभाव से प्रेरित हो यह, चित उसी में लीन रहो॥

विषयों की आशा नहीं जिनके, साध्य-भाव धन रखते हैं।
निज-पर के हित-साधन में जो, निश-दिन तपतर हहते हैं॥
स्वार्थ-त्याग की कठिन तपस्या, बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत के, दुःख-समूह को हरते हैं॥

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह, चित सदा अनुरक्त रहे।
नहीं सताऊ किसी जीव को, झूठ कभी नहीं कहा करूँ।
परधन-वनिता पर न लुभाऊ, संतोषामृत पिया करूँ॥

अहंकार का भाव न रक्खूँ, नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को, कभी न ईर्ष्या-भाव धरूँ॥
रहे भावना ऐसी मेरी, सरल-सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में, औरों का उपकार करूँ॥

मैत्री-भाव जगत में मेरा, सब जीवों पर नित्य रहे।
दीन-दुरुखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा-स्रोत बहे॥
दुर्जन-कूर-कुमार्गरतों पर, क्षोभ नहीं मुझ को आवे।
साध्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसी परिणति हो जावे॥

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा, करके यह मन सुख पावे॥
होऊ नहीं कृतप्र कभी मैं, द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, दृष्टि न दोषों पर जावे॥

कोई बुरा कहे या अच्छा, लक्ष्मी आवे या जावे।
लायो वर्षों तक जीऊ, या मृत्यु आज ही आ जावे॥
अथवा कोई कैसा ही भय, या लालच देने आवे।
तो भी न्याय-मार्ग से मेरा, कभी न पद डिगने पावे॥

होकर सुख में मग्न न फूलें, दुख में कभी न घबरावें।
पर्वत-नदी-शमशान भयानक, अटवी से नहीं भय खावें॥
रहें अडोल अकम्प निरंतर, यह मन दृढ़तर बन जाये।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में, सहनशीलता दिखलावें॥

सुखी रहें सब जीव जगत के, कोई कभी न घबरावें।
वैर पाप अभिमान छोड जग, नित्य नये मंगल गाये॥
घर-घर चर्चा रहे धर्म की, दुष्कृत-दुष्कर हो जाये।
ज्ञान-चारित्र उन्नत कर अपना, मनुज-जन्म फल सब पावें॥

ईति भीति व्यापे नहीं जग में, वृष्टि समय पर हुआ करें।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी, न्याय प्रजा का किया करें॥
रोग, मरी, दुर्भिक्ष न फैले, प्रजा शान्ति से जिया करें।
परम अहिंसा धर्म जगत में, फैल सर्व हित किया करें॥

फैले प्रेम परस्पर जग में, मोह दूर पर रहा करें।
अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहीं, कोई मुख से कहा करें॥
बन कर सब 'युग वीर' हृदय से, देशोन्नति रत रहा करें।
वस्तु स्वरूप विचार खुशी से, सब दुःख संकट सहा करें॥

श्रद्धेय भवरलालजी जैन इन्हें श्रद्धावंदन दिवस पर कृतज्ञतापूर्वक प्रणाम...

जन्म : १२ दिसंबर १९३७ निर्वाण : २५ फरवरी २०१६

JAINART / 022025



